रिकॉर्ड :– कौन आया मेरे मन के द्वारे..... ॐ पिताश्री 11/7/63

ओम् शांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, इस समय बच्चे किस सोच में पड़े हुए हो? जब से बाप के बनते हो तो सभी आत्माएँ बदल जाती हैं। आगे तो जिस्मानी आशाएँ ही रहती थीं– बच्चे पैदा करने हैं, शादी करानी है, यह करना है; यह मामा–चाचा–काका है, यह बुद्धि में रहता है। दुनिया के मनुष्यों को इस दुनिया के संबंध की बातें ही याद पड़ती हैं। तुम बच्चों की आशाएँ अब बदल गई हैं। तुम जानते हो, बेहद का बाप मिला है, उनसे वर्सा मिलना है। दुनिया के मनुष्यों की आशाएँ हैं इस लोक के लिए। तुम बच्चों की आशाएँ हैं परलोक के लिए। एक है मुक्ति लोक, दूसरा जीवनमुक्ति लोक। परलोक में हम आत्माएँ रहती हैं और जीवनमुक्ति लोक में हम, जो बाप से सहज राज्य–योग सीख रहे हैं, वो आवेंगे। बुद्धि में बैठना है, हम महाराजा–महाराणी बनेंगे, 21 जन्म स्वर्ग में सुख भोगेंगे। यह विचार बुद्धि में चलने चाहिए। रात–दिन पुरुषार्थ करते फिर पक्के हो जाते हैं। इस दुनिया का संबंध टूट जाता है। बाप ने अपना परिचय दिया है। अलफ–बे समझाया है। अलफ अल्लाह अर्थात् एक को कहा जाता है। फिर बे कहा जाता है सारी रचना को। ऐसे नहीं, बे माना माया। बाबा तो स्वर्ग स्थापन करते हैं, माया को नहीं रचयिते(रचते) हैं। मनुष्य माया को रचना भी समझ लेते हैं। पहले–2 तो बच्चों को अलफ–बे को समझना है। हम आत्मा सो परमपिता प० की संतान हैं। मम् प्रकृति रचना। अब तुम बच्चे जानते हो, सारा कल्प तो जिस्मानी संबंध में रहे हैं– यह मामा, यह चाचा आदि हैं– अभी वो देह–अभिमान तोड़ देही–अभिमानी बनते हैं। इस दुनिया के चाचे–मामे, गुरु–गुसाई आदि सभी को छोड़ना है। सतयुग में तो गुरु–गुसाई होते नहीं। बाकी माँ–बाप आदि जिस्मानी संबंध जुटा रहता है।

वहाँ रूहानी लव की बात नहीं। अभी अपन पास रूहानी लव है, तो जिस्मानी लव को मिटाए देना है। हम वहाँ के रहवासी हैं। अब खेल पूरा हुआ। इस शरीर को अब छोड़ना है। पार्ट बजाते–2 आत्मा और शरीर दोनों छी–2 हो गए हैं। आत्मा में ही खाद पड़ती है। आत्मा पवित्र सच्चा सोना थी, तो शरीर भी पवित्र था, गोल्डन एज्ड में रहते थे। अब आत्मा अपवित्र बन गई है तो आयरन एज्ड बन गए हैं। आत्मा पतित होने से शरीर रूपी जेवर भी पतित बन पड़ता है। (सोने का मिसाल) अभी बाबा कहते हैं– मैं तुम बच्चों को सच्चा सोना बनाता हूँ। उसका नाम ही है गोल्डन एज, सतोप्रधान दुनिया। तुम बच्चों को गुल–2 बनाए तुम्हारा छी–2 शरीर बदल, नया देते हैं। यहाँ तो प्रकृति ही तमोप्रधान है; इसलिए आत्माओं को ले जाऊँगा, फिर जब सतोप्रधान प्रकृति होगी तब भेज देंगे। यह अक्षर भी समझाने लिए कहते हैं। बाकी है तो ड्रामा की नूँध। अभी फिर तुमको सुख के संबंध में बाँध रहा हूँ। तुम भविष्य का महाराजा–महाराणी अथवा प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बनेंगे। उस सुख के संबंध का सा० भी कराते हैं, समझाते भी हैं। इसको परोक्ष–अपरोक्ष कहा जाता है। ज्ञान से तो तुम समझते हो, भविष्य में महाराणी–महाराजा बनेंगे, हमारी गोद में ऐसा तेजोमय चमकीला बच्चा होगा। तो अब तुम्हारी आशाएँ बदल गई हैं। मनुष्यों की तो आश रहती, मैं बैरिस्टर बनूँगा, इंजीनियर बनूँगा। तुम तो समझते हो, यह कब्रस्तान है, इनको क्या याद करना है! यह तो खतम होना है। परिस्तान में हम परियों मिसल रहते हैं। कहते हैं, मानसरोवर में टुबका मारने से परी बन जाते हैं। यह हैं सभी गपोड़े। हाँ, ज्ञान मानसरोवर में टुबके लगाते रहते हैं। ज्ञान स्नान तो दो–तीन बारी करना चाहिए। जितना ज्ञान स्नान करेंगे, योग में रहेंगे, इतना हीरे जैसा कीमती बन जावेंगे। हीरे जैसा और कौड़ी जैसा भी भारत में ही बनते हैं। तुम जानते हो, हम क्या से क्या बनते हैं। सो भी इस एक ही जन्म में बनते हैं। एक ही जन्म की बात है ना! आज मनुष्य राजा है, कल कंगाल बन जाता; कोई फिर कंगाल से ऊँच बन जाते, बादशाह को कोई सिपाही उतार के तख्त पर बैठ जाते। बाप कहते हैं– तुमको मैं मनुष्य से देवता बनाता हूँ। अब तुम ब्राह्मण हो। फिर देवता बनेंगे। यह है ही नई दुनिया के लिए, मैं इस दुनिया के लिए सुख देने नहीं आया हूँ। तुमको नई दुनिया के लिए बहुत सुख देता हूँ। तुम राज्य–योग सीख रहे हो। आत्मा इस शरीर द्वारा सीख रही है। कौन सिखलाते हैं? बाबा। वो हम सभी आत्माओं का बाप है, जिसको अल्फ अथवा अल्लाह कहते हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, तुमको कल्प–2 यह नॉलेज, तुम्हारा बेड़ा पार करने देता हूँ। तुम पावन बनेंगे तो भारत भी बनेगा। मैं सृष्टि को पवित्र कैसे बनाता हूँ, यह भी ड्रामा में पार्ट है। सभी उथल–पाथल हो नया बनना है। नई दुनिया थी, अब फिर वो ही पुरानी हो गई है, फिर रिपीट करेंगे। सतयुग आदि सत् कहा जाता है। बनी–बनाई बन रही..... चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी हो। यह ऐसा पार्ट था, फिर चिंता करने की क्या दरकार! सा(क्षी) हो ड्रामा को देखते हैं। बाबा भी पार्ट बजाते, हम भी पार्ट बजाते हैं। बाबा पतित से पावन बनाने का पार्ट बजाते हैं। दुनिया तो कह देती, वो निराकार है। नाम–रूप से न्यारा है। वो साकार भी नहीं है, तो आकारी भी नहीं है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, फिर यह है स्थूलवतन, साकारी दुनिया। ब्र०वि०शं० को सूक्ष्म कहते हैं। सूक्ष्म सृष्टि में रहने वाले हैं। वो है मूल सृष्टि में रहने वाले। यह तीन तब्बकों को(का) भी तुमको ज्ञान है। मूलवतन में हम आत्माएँ रहती हैं। वो बाबा का घर है, यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। तो हमको निराकारी से साकारी ज़रूर बनना पड़े। बाप कहते हैं, मैं आकर साकार का आधार लेता हूँ, फिर ब्राह्मण कुल को इन द्वारा रचयिता हूँ। यह ब्राह्मण सेवाधारी हैं। रूहानी सेवा करते हैं, उसका फल मिलता है। रूह को इंजेक्शन लगाना है वा उनका बुद्धियोग बाप से जोड़ना है। गाया भी जाता है– अवर संग तोड़, तुम संग जोडूँ। तुम मेरे को याद करते हो तो मैं तुम्हारा बुद्धियोग अवर संग तोड़ एक से जोड़ता हूँ। गुरु का धंधा ही यह है; परन्तु उस बाप को बच्चे अथवा साजन को सजनियाँ जानती ही नहीं, तो

बुद्धियोग कैसे लगावे! सन्यासियों के लिए समझते हैं, वो बुद्धियोग जोड़ने वाले हैं; परन्तु वो तो जानते ही नहीं। वो ऐसे कब नहीं कहते कि अवर संग तोड़ तुम संग जोड़ूँ। वो तो अवर संग तोड़ जंगल में चले जाते हैं। कह देते, एको अहम् बहु सन्यासी। सभी में व्यापक है। इ(स)से फायदा तो कुछ भी नहीं है। तो बाप समझाते हैं– लाडले बच्चे, ऐसे भी आजकल कई कहते हैं, हमको प० प्रेरणा से पढ़ाते हैं। बहुत ठग लोग होते हैं, कहते– प० हमारे में आते हैं। अरे, प० है कौन? उनकी महिमा तो बताओ। आवेगी ही नहीं। तुम जानते हो, वो सुख का सागर, आनंद का सागर है, बीजरूप है। बाप है ना! बाप ने समझाया है, मनुष्य है हद के ब्रह्मा। रचना रचयिते(रचते) हैं तो कहते हैं– मेरी स्त्री, मेरे बच्चे। वो है हद की रचना। यह तो बेहद का बाप है। तुम कितने बच्चे हो। अभी तो वृद्धि को पाते जावेंगे, हूबहू जैसे झाड़ की वृद्धि हो रही है। तुम यहाँ बैठ ट्रान्सफर करते हो, शूद्र को ब्राह्मण बनाते हो। ब्राह्मण से फिर देवता धर्म में आते रहेंगे, सुख भोगते रहेंगे। तो जब ऐसे गीत बजते हैं, तो इसका अर्थ भी अंदर में छम–2 करना चाहिए और सभी को भूल एक की ही याद में रहते हैं। वो बहुत मीठा है। हम ज्ञान से गुल–2 बन रहे हैं। हम जानते हैं, हम भविष्य में फिर नया चोला लेंगे। यह चोला बदलना है। तो अब बाप को याद करना है। सारा कल्प हम देह–अभिमानी बने हैं। जिस्मानी माँ–बाप कहते आए हैं। अब रूहानी बाप मिला है। आत्माएँ इस शरीर द्वारा कहती है– वो हमारा बाप है, जिस्मानी माँ–बाप को छोड़ दो। अगर उस तरफ बुद्धि होगी तो फिर जिस्मानी दुनिया में आना पड़ेगा, यहाँ जन्म दे देंगे। विकर्म भी भस्म न होंगे। इसलिए कोई भी जिस्मानी वस्तु को याद न करना है। इसलिए तुमको नई दुनिया का सा० भी कराता हूँ। तुम समझते हो, बरोबर कलियुग के बाद, सतयुग डेविल वर्ल्ड के बाद, डीटी वर्ल्ड आवेगी। मनुष्य तो घोर अंधियारे में हैं। तुम अब घोर सोझरे में हैं। कोई अधूरे, कोई तो एकदम झुँझार हैं। पूरा योग न लगाते हैं। अभी तुम बच्चों (का) बाप ने बुद्धि का ताला खोल दिया है। हम बाबा की संतान हैं। बाबा पढ़ाते हैं। बाबा हमको गुल–2 लायक बना रहे हैं। हम तो नालायक थे। माया रावण ने नालायक बना दिया और शोक वाटिका में बिठा दिया। वहाँ है अशोक। नो शोक। यहाँ तो शोक ही शोक है। तो बाप कहते हैं, मैं भारत को ही हीरे जैसा बनाता हूँ, और खण्ड कोई हीरे जैसे नहीं बनते। भारत को हीरे जैसा बनाता हूँ। अभी भारत कौड़ी जैसा है। कंगाल है ना! इसलिए तुम बच्चे अपन को हीरे जैसा बनाए, फिर भारत को हीरे जैसा बना रहे हो। फिर जो बनते हैं, वो ही हीरे जैसे भारत की पालना करेंगे। तो इतनी मगरूरी रहनी चाहिए। काँग्रेस को मगरूरी है ना! अब तुम कहते हो, तुमने तो कुछ नहीं किया, और ही दुखी हो पड़े हो। हम माया रावण ... से छुड़ाते हैं। लिबरेट कर रहे हैं। भारत को छुड़ाए रहे हैं। माया ने बहुत दुखी किया है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। मुसलमानों ने ही बहुत जुल्म किए हैं। क्रिश्चियन ने कोई ऐसा जुल्म नहीं किया। वो न होते तो दुखी होते थे। मुसलमानों की लड़ाई अभी तक लगी आ रही है। क्रिश्चियन्स ने तो ऐसा नहीं किया कि क्रिश्चियन बनो, नहीं तो कत्ल करेंगे। मुसलमान से फिर भी क्रिश्चियन्स का राज्य अच्छा था। उन्हों के राज्य में खण्ड आदि कितनी सस्ती थी। अभी तो चीनी मिलती ही नहीं। कितने टैक्स आदि लगाए हैं। बिल्कुल कंगाल बन गए हैं। एक दिन अनाज भी नहीं मिलेगा फिर एक/दो में मारामारी, हंगामा हो जावेगा। तुम तो जानते हो, हम इन हंगामों से दूर हैं। तुम्हारा अनायास वो समय आ जावेगा। समझेंगे, बस, हम इस शरीर को छोड़ बाबा के पास चले जाते हैं। बैठे–2 पुरानी जूती, पुरानी दुनिया को छोड़ देंगे। ऐसे चमत्कारी बुद्धि हो जावेगी। ऐसा होगा अगर ऐसी अवस्था को जमाते रहेंगे तो। पिछाड़ी में तुम बहुत मौज में रहेंगे। जैसे सर्प पुरानी खल को बदलते हैं, हम भी इस दुनिया से पार हो जाने वाले हैं। ऐसी अव(स्था)

होगी तो झट पुरानी खल को छोड़ देंगे। अगर ठीक रीति पास न हुए होंगे तो खिट–2 होगी। फिर ऐसे शरीर छोड़ न सकेंगे। तुमको यह प्रैक्टिस रखनी चाहिए। बाबा की याद में रहते–2 फिर शरीर छूट जावेगा। यह भी जब बुद्धि में रहेगा तब तो काम करेंगे ना। बरोबर आफतें तो आने वाली हैं। हम बाबा से योग लगाते रहेंगे। घर रहते, बाल–बच्चों की पालना करते, यह अभ्यास करना पड़ता है। इस पुराने शरीर को छोड़ हम बाबा (के) पास जाते हैं। तुम्हारा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा नुँधा हुआ है, कोई भी समय बैठे–2 शरीर छूट जावेगा; जैसे मक्खन से वार। जो अच्छे–2 योगी होंगे, जो पूरा योग लगाते रहेंगे। तुम जानते हो– अब वापस जाना है। स्वर्गधाम में जावेंगे वाया मुक्तिधाम। तुम बच्चों की बुद्धि सबसे न्यारी है। पहले हम बाबा पास जावेंगे, फिर आवेंगे स्वर्ग में। जो पवित्र आत्माएँ होंगी वे तो अवश्य जावेंगी। पवित्र चीज़ फिर यहाँ रह न सकेगी। (यह ज्ञान)..... रहना चाहिए और फिर प्रालब्ध का नशा भी रहना है। माया के बीच में भी रहना है ..... फूल समान बनना है। योग और ज्ञान। योग बाबा के साथ, ज्ञान है कि हम 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनेंगे। बहुत सहज बात है। फिर संग भी ऐसे ... चाहिए। उठते–बैठते, कर्म करते इस अवस्था में रहना है। तुम कर्मयोगी हो। कछुओं का मिसाल भी बाबा ने (सम)झाया है, कैसे अंग समेट लेते हैं। सन्यासी भी यह मिसाल देते हैं; परन्तु उन्होंने कॉपी की है। वास्तव में यह है तुम्हारे लिए। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारे लिए है। उन्होंने तुमसे कॉपी की है। उनको कहना चाहिए, तुम ऐसे करते थोड़े ही हो। तुम तो केवल पुरुषों को ले जाते हो, निवृत्तिमार्ग वाले हो। प्रवृत्तिमार्ग वाले ही अपवित्र बने हैं, फिर पवित्र बनना है। अच्छा, ... कुछ (म)म्मा समझाती है, कुछ बापदादा समझाते हैं। बच्चों को धारणा करनी है। तीन इंजन मिले हैं, माँ,बाप,दादा। ऊँची पहाड़ी (पर) जाते हैं ... दो इंजन लगाते हैं। तुमको तो तीन इंजन मिले हैं। गोप–गोपिकाओं की आत्माएँ ..... आती हैं। हम सो महारानी–महाराजा .....बनेंगे फिर प्रजा भी चाहिए। (दो लाइन मिटी हुई हैं).....

.....

.....मुरली ज़रूर सुननी चाहिए। हम न सुना तो कच्चे पड़ जावेंगे। इसको फिर मिथ्या अहंकार कहा जाता है। जो हम न सुनते हैं, उनको मिथ्या ज्ञान का अहंकार कहेंगे। ऐसे भी मूर्ख बुद्धि है, क्लास में नहीं जाते हैं पढ़ने। समझते, हमारे पास .... में मुरली आए तो हम पढ़ लेंगे। तुमको देख और भी करेंगे। तो तुम और ही पाप आत्मा बन पड़ेंगे। औरों को गिराने के तुम निमित्त बन पड़ेंगे। ॐ

चेम्बूर – पिताश्री :– ऊँ शांति। बच्चों को समझाते तो बहुत है; परन्तु नम्बरवार समझते हैं, धारणा करते हैं। कोई 5 विकारों को पूरा जीत ... सकते हैं, कोई न जीत सकते हैं। किसी में क्रोध है, तो समझ जाते हैं, उतना ऊँच ना पाय सकेंगे। कोई तो अच्छी सर्विस भी करते हैं; परन्तु कोई में क्रोध है, तो फिर डिससर्विस कर (लेते) हैं। औरों को पवित्र बनने लिए कहते, और खुद विकार में जाते हैं, तो गोया (अप)ना डिस्ट्रक्शन कर देते हैं। कोई में मोह हो, और(औरों) को समझाते हैं तो (भल) उनका कल्याण हो जावेगा; परन्तु अपना अकल्याण कर देते हैं। दूसरों के रजिस्टर देखते हैं; परन्तु अपना रजिस्टर भी देखे ना! अपना रजिस्टर खराब होगा तो गड्ढे में गिर पड़ेंगे। अपना भी रजिस्टर अलग रखना है, दूसरे का भी रखाना है। अब तक तो तुम मात–पिता का अर्थ ही बहुतों ने नहीं समझा हुआ है। बड़ी गूढ़ बात है। एक दिन समझावेंगे, बाप से वर्सा लेना बहुत सहज है; परन्तु राजधानी स्थापन होती है, उसके लिए पुरुषार्थ चाहिए पढ़ाई में। टीचर कहेंगे, अच्छा पढ़ो। टीचर तो एक ही है। गुरु भी कहेंगे, अच्छी रीति सन्यास करो। यहाँ तो वो ही टीचर–गुरु है। निराकार साकार दोनों के बच्चे हो। ब्रह्मा मुखवंशावली हो, तो उनके भी बच्चे, शिव के भी बच्चे हो। ॐ यादप्यार शीला, सुमित्रा की मधुबन से स्वीकार करना जी। कल जा रहे हैं।